आई प्याज बहार लाई

प्याज एक महत्वपूर्ण नगदी फसल है। हमारे देश में कुल सब्जी उत्पादन क्षेत्रफल के 11.4 प्रतिशत भू-भाग पर प्याज की खेती हो रही है व इसकी खेती से कुल सब्जी उत्पादन में 10.4 प्रतिशत का योगदान मिल रहा है। स्थानीय खपत के अलावा निर्यात भी किया जाता है। मध्य पूर्व के बाजारों में भारतीय प्याज की मांग विशेषकर इसकी अच्छी गुणवत्ता के कारण सदैव बनी रहती है।

जलवायु

प्याज के लिए समसीतोष्ण जलवायु सर्वोत्तम समझी जाती है, प्याज मूलरूप से सर्दी में उगाया जाता है, लेकिन खरीफ की किस्में प्राप्त होने पर उनको खरीफ में भी लगाया जाने लगा है। सर्वोत्तम पैदावार के लिये 15–21 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान तथा 10 घंटे वाले लम्बे दिन उपयोगी है।

भूमि

प्याज की खेती के लिए उपजाऊ बलुई दोमट या दोमट भूमि में उपयुक्त रहती है। खरीफ फसल हेतु खेत चयन में सावधानी रखें। खेत में उपयुक्त जल निकास की व्यवस्था हो।

किस्म

एन–53, एग्री फाउण्ड रेड डार्क,भीमा सुपर, भीमा डार्क रेड, भीमा रेड,भीमा सुभ्रा,अर्का कल्याण

भूमि की तैयारी

खेत की गहरी जुताई करके खेत को भुर–भुरा बना लेना चाहिये।

बीज दर

खरीफ फसल हेतु 12–15 कि. प्रति हेक्टे. बीज पर्याप्त रहता है।

बुवाई समय

नर्सरी में बुवाई का उपयुक्त समय मई–जून है।

नर्सरी तैयार करना

प्याज की नर्सरी हेतु उपजाऊ, जल निकास युक्त तथा सिंचाई की सुविधा युक्त भूमि का चयन करें। एक हेक्टेयर में प्याज लगाने हेतु 500 वर्ग मीटर में नर्सरी तैयार करनी चाहिये, नर्सरी क्यारी 1 मीटर चौड़ी व 15 सेमी. ऊंची बनाये। क्यारी में सिंचाई हेतु बूंद–बूंद सिंचाई का स्प्रिंकलर का उपयोग भी किया जा सकता है। अधिक गर्मी से बचाने के लिये शेड नेट का उपयोग किया जा सकता है।

रोपाई की दूरी

प्याज की पौध को पंक्तियों में 15–20 सेमी की दूरी पर तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी रखते हैं।

खाद एवं उर्वरक

खेत तैयार करते समय 25–30 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद मिट्टी में मिलाये तथा 130 किलो यूरिया+310 किलो फास्फोरस +100 किलो पोटाश+ 20किलो सल्फर प्रति हेक्टेयर रोपाई के पूर्व मिट्टी में मिलायें। शेष यूरिया 130 किलो प्रति हेक्टेयर को रोपाई में 30–40 दिन बाद में देना चाहिये।

पौध रोपण

वर्षा में रोपाई हेतु ऊंची क्यारी या मेड़ नाली पद्धति से ही पौध लगायें। जिससे जल निकास सुगमता पूर्वक हो सके।

प्याज की खुदाई

सामान्यतः रबी फसल में तैयार होने पर पत्तियों के शीर्ष पीले पड़कर सूख जाते हैं। तब सिंचाई रोक दें तथा इसके 10–15 दिन बाद सिंचाई करें। खरीफ मौसम में पत्तियां गिरती नहीं हैं अतः गांठों का आकार 6–8 सेमी. व्यास का हो जायें तो पत्तियों को पैरों से जमीन पर गिरा दें। जिससे पौधों की वृद्धि रुक जाये तथा गांठें ठोस हो जाएं। इससे 15 दिन बाद खुरपी से खुदाई करें। खुदाई के बाद कंदों को पत्तों सहित 3–5 दिन तक छाया में रखें, इसके बाद 2.0–2.5 सेमी, डंठल छोड़कर पत्तों को काटें तथा अच्छी तरह सुखा लें।

जल प्रबंधन

साधारणतः खरीफ फसल हेतु सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है, फिर भी वर्षा नहीं होने परखेत में नमी बनाये रखने हेतु हल्की सिंचाई करें। खरीफ प्याज में जल निकास का उचित प्रबंध करना महत्वपूर्ण है।

निंदाई-गुड़ाई

प्याज के अच्छे उत्पादन के लिये खेत का खरपतवारों से मुक्त रखें। अच्छी फसल के लिए शुरू में 2–3 बार खरपतवार निकालना आवश्यक है। खरपतवारनाशक के रूप में बासालिन 2–2.5 लीटर/हेक्टर रोपाई के तुरन्त बाद छिड़काव करें तथा 40–45 दिन बाद निंदाई–गुड़ाई करें।

उपज

200–250 क्वि/हेक्टेयर तक उपज मिल जाती है।

पौध तैयार करने के लिए वैज्ञानिक सूझ–बूझ का ध्यान दें ताकि मेहनत, लागत, खर्च व समय की बचत हो सके।

पौध नर्सरी महिलाओं की आय का स्त्रोत

नर्सरी में पौध तैयार करने की विधि

अ: पॉली बैग में पौध तैयार करना

इस विधि के लिए 200 गेज मोटी पालीथिन शीट के बने 20×10 सेमी आकार वाले पाली बैगों की आवश्यकता होती है। इन पालीबैगों में नीचे तथा बगल में छेद कर दें। जिससे वायु का संचार व उचित जल निकास बना रहता है। इन थैलियों में छनी हुई सड़ी गोबर की खाद तथा मोटी बालू का समानुपाती मिश्रण भरा जाता है मिश्रण भरने से पहले मिट्टी का निजर्मीकरण कर लिया जाता है। कद्दूवर्गीय (करेला, लौकी, स्कवाश, कद्दू, तरबूज आदि) बीजों का आवरण सख्त होने के कारण बोने से पहले रातभर पानी में भिगा दें। प्रत्येक बैग में आधा से एक सेमी की गहराई पर दो से तीन बीज बोकर हल्की सिंचाई कर दें मुख्यतः वर्षा ऋतु में पौध तैयार करने के लिए 3 से 5 मीटर चौड़ी तथा जमीन की सतह से 15 से 20 से.मी. ऊंची उठी हुई क्यारियों के बीच में 30 से.मी. स्थान अवश्य छोड़ें इससे वर्षा का पानी इस स्थान से होता हुआ बाहर निकल जाता है तथा क्यारी ऊंची करने के लिए मिट्टी इसी स्थान से मिल जाती है। इसके साथ–साथ खरपतवार निकालने और कीट व फफूंदनाशक दवा के प्रयोग करने में सुविधा होती है

ऊंची उठी हुई क्यारी विधि

मुख्यतः वर्षा ऋतु में पौध तैयार करने के लिए 3 से 5 मीटर चौड़ी तथा जमीन की सतह से 15 से 20 से.मी. ऊंची उठी हुई क्यारियों के बीच में 30 से.मी. स्थान अवश्य छोड़ें इससे वर्षा का पानी इस स्थान से होता हुआ बाहर निकल जाता है तथा क्यारी ऊंची करने के लिए मिट्टी इसी स्थान से मिल जाती है। पौधशाला का स्थान थोड़ा ऊंचाई व ढालू हो ताकि वहां पानी न भरे। सूर्य का प्रकाश पूरे दिन मिले। 1 वर्ग मी. में 2 किग्रा. पकी गोबर की खाद तथा भारी मिट्टी में 2–3 किग्रा. बालू मिला दें। मिट्टी में फफूंद नाशक जैसे कैप्टान 5–6 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल कर मिट्टी तर कर दें। इसी प्रकार कीटनाशक के रूप में फ्यूराडान की 5 ग्राम मात्रा प्रति वर्ग मीटर पौधशाला की क्यारी में मिलायें।

बीजोपचार

बीजों को 2 ग्राम थाइरम कैप्टान तथा 1 ग्राम बाविस्टीन प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित कर बोयें।

मृदा सौर्यन या आतपन द्वारा

यह निजर्मीकरण की सबसे सस्ती विधि है। इस विधि में क्यारियां बुवाई के 7.8 सप्ताह पूर्व तैयार की जाती है तथा इनको पानी से पूरी तरह तर करके नम करते हैं। इसके पश्चात 200 से 300 गेज मोटी पारदर्शी प्लास्टिक से क्यारियों को चारों तरफ भली–भांति ढककर गीली मिट्टी से दबाकर वायुरोधित कर देते हैं। इस प्लास्टिक आवरण को 7.8 सप्ताह पश्चात एवं बीज बोने से 2.3 दिन पूर्व ही हटायें। यह विधि उसी दशा मे पूर्णतया प्रभावकारी होती है। जब दिन का तापमान 35 से 40 डिग्री सैल्सियस या इससे अधिक हो तथा मौसम शुष्क एवं सूर्य चमकदार हो। पौधशाला में आर्दगलन बीमारी अधिक लगती है। इस बीमारी की रोकने के लिये ट्राईकोडर्मा 6–8 ग्राम 1 किग्रा बीज के लिये ओर 10–20 ग्राम 1 कि.ग्रा. कम्पोस्ट या गोबर की खाद मिलाकर एक वर्गमीटर मृदा के शोधन के लिए प्रयोग करें।

नर्सरी से उपज व आमदनी –पौध नर्सरी की 3×10 मीटर क्षेत्र में नर्सरी स्थापना (भूमि की तैयारी, समतलीकरण, क्यारियों का निर्माण, पौध संरक्षण दवायें, बीज, गोबर खाद हेतु) के प्रारम्भ में लगभग 3000 रुपये व्यय आता है जो बाद में 2000–3000 प्रति 30 वर्ग मीटर आता है जिससे 2,00,000 पौधे प्राप्त किये जा सकते है सब्जियों की पौध बिक्री 25 रू. प्रति सैकड़ा करने से 8000–10000 रुपये की आमदनी होती है।

स्थान एवं भूमि का चुनाव

- अच्छी नर्सरी के लिए उचित जल निकास वाली बलुई दोमट भूमि अच्छी होती है।
- क्यारी का चयन ऊंचे स्थान पर करें जहां पर पानी का जमाव बिल्कुल न हो। इसके साथ ही प्रत्येक वर्ष पौधशाला नई जगह पर उगायें।
- सूर्य के प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था हो तथा सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था हो।
- आवास से कम दूरी पर नहीं हो ताकि पौधशाला की देखरेख व निरीक्षण समय–समय पर हो सके।